शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

अंधायुग' में नवमानवतावादी चिन्तन

डॉ.संध्या गंगराड़े
प्राध्यापक (हिन्दी)
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नात.कन्या महाविद्यालय
किला भवन, इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

साहित्य के केन्द्र में मनुष्य है; मनुष्य जो सृष्टा की सर्वश्रेष्ठ कृति है। मानव कल्याण की कामना साहित्य का लक्ष्य रहा है, परन्तु मानव का कल्याण हो कैसे ? इसी प्रश्न के उत्तर की खोज में धर्म, दर्शन, वेद, उपनिषद, नीति ग्रंथों की रचना की गई, इसी की खोज में विचार जगत में विभिन्न वाद आए - मनोविश्लेषणवाद, अस्तित्ववाद, मार्क्सवाद, मानवतावाद, नवमानवतावाद आदि। नवमानवता मानवतावाद की ही अगली कड़ी है। परम्पराएं जब रूढि बन जाती हैं, तब मानव विकास अवरूद्ध होने लगता है, समाज में विकृतियाँ बढ़ने लगती हैं, परिणामस्वरूप युग के अनुरूप नवीन विचारधाराएं जन्म लेने लगती हैं। नवमानवतावाद भी चली आती परम्पराओं का परिष्कृत रूप कहा जा सकता है। यह अपने में आधुनिकता बोध के साथ मनोविष्लेषण, मार्क्सवाद और अस्तित्ववाद को भी समेटे है। प्रस्तुत शोध पत्र में अंधायुग में नवमानवतावादी चिंतन पर विचार किया गया है।

नव मानवतावाद

पाँचवे दशक में जो परिवर्तन हुए, घटनाएं हुईं उससे मानवता थर्रा उठी, औशविट्ज के गैस चेंबर में लाखों यहूदियों की मौत, हीरोशिमा और नागासाकी पर बमवर्षा और भारत विभाजन से उठा साम्प्रदायिक रक्तपात, अहिंसा की लड़ाई की हिंसा में परिणति, अत्यंत भयावह थी। मानव विकृतियों का शिकार होने लगा, अमानवीयता, और क्रूरता ने आस्था और विष्वास को डगमगा दिया। साहित्य में मनोविश्लेषण के माध्यम से मानव मन की काम-वासना; हीनता बोध सामाजिकता का परीक्षण किया गया, शोषण के विरूद्ध आवाज उठाई गई, रूढियों का विरोध किया गया, मानव की मानव के रूप में गरिमापूर्ण व्याख्या की गई, बाह्य शक्तियों, ईश्वर आदि को नकारा गया और मानव को अपने दायित्व का बोध भी कराया गया। नवीन बदली हुई परिस्थितियों में मानवतावाद का परिवर्तित और परिवर्धित रूप नव मानवतावाद आया। नव मानवतावाद पर पहले पहल चिन्तन मानवेन्द्र राय ने किया। बी.एन.सिंह के अनुसार "राय ने अपने संपूर्ण चिन्तन और नवीन मानवतावादी सिद्धांत में मानव को ही केन्द्र में रखा है। उसके लिए मानव ही सर्वोपरि है। उनके अनुसार मानव ही मानव का मूल है। मानव ही प्रत्येक वस्तु का मापदण्ड है। मानव अपने में पूर्ण है। वह स्वायत्त है। उसे अपने विकास के लिए किसी अति प्राकृतिक सत्ता की सहायता की आवश्यकता नहीं है। वह स्वयं सक्षम है अपने विकास के लिए।".1 मानवी गरिमा, सम्मान और आत्म गौरव की प्रतिष्ठा, सब प्रकार के शोषण से मुक्ति आदि विषयों पर चिन्तन तो पहले से चल रहा था नामकरण बाद में हुआ। विवेकानंद का नव्य वेदांत और क्या है ? उनके विचारों को शक्तिदायी विचार के रूप में इन शब्दों में अभिव्यक्त किया गया है, "उन्होंने अध्यात्म की व्यावहारिकता पर अपने विचार

प्रगट करते हुए कहा कि मैं उस धर्म और ईश्वर में विश्वास नहीं करता जो विधवा के आँसू पोंछने या अनाथों को रोटी देने में असमर्थ है। उन्होंने कहा ईश्वर को ढूँढने कहाँ जाना है। अपना मस्तक ऊँचा करो तुम में से हर एक व्यक्ति के भीतर एक ईश्वर विद्यमान है। सच्चे वेदांती को अपने मनुष्य होने में गर्व होना चाहिए उसे समाज से उन सब बातों को मिटाने का प्रयत्न करना चाहिए जो मनुष्य को अपमानित करती हैं।".2 किसी बाहरी शक्ति पर विश्वास मानव के विकास में बाधक है। मनुष्य को किसी मनुष्येतर शक्ति की आवश्यकता नहीं उसके विश्वास टूटते हैं तो वह स्वयं उन्हें पुनः संयोजित करके अपने को खण्डित और विघटित होने से बचा सकता है। "आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी इस नवीन मानवतावाद के दो लक्षण बताए हैं - 1. मनुष्य की महिमा और मानवीय मूल्यों में विश्वास तथा 2. मनुष्य के मर्त्य-जीवन को किसी प्रकार के पाप फल भोगने का परिणाम न समझ कर इसे उसी दुनिया में दुःख-शोक से बचाना और इसी दुनिया में सुख-समृद्धि से युक्त करना।".3

इस नव मानवतावाद को वे मानव की मुक्ति का आधार भी मानते हैं - "इस नवीन मानवतावाद को स्वीकार करने का युक्ति संगत परिणाम हो सकता है मनुष्य की मुक्ति। सब प्रकार के सामाजिक और राजनीतिक और आर्थिक शोषण से मनुष्य को मुक्त किया जाय, क्योंकि मनुष्य के जीवन का बड़ा मूल्य है। मनुष्य पर अखण्ड विश्वास इसका प्रधान संबल है।".4 इस नव मानवतावाद के नये मनुष्य को नयी कविता के संदर्भ में जगदीश गुप्त ने परिभाषित करते हुए लिखा है - "नया मनुष्य रूढ़ि-चेतना से मुक्त, मानव-मूल्य के रूप में स्वातन्त्र्य के प्रति सजग, अपने भीतर आरोपित सामाजिक दायित्वों का स्वतः अनुभव करने वाला, समाज को समस्त मानवता के हित में परिवर्तित करके नया रूप देने के लिए कृत संकल्प, कुटिल स्वार्थ भावना विरत, मानव-मात्र के प्रति स्वाभाविक सह-अनुभूति से युक्त, संकीर्णताओं एवं कृत्रिम विभाजनों के प्रति क्षोभ का अनुभव करने वाला, हर मनुष्य को जन्मतः समान मानने वाला, मानव व्यक्तित्व को उपेक्षित, निरर्थक और नगण्य सिद्ध करने वाली किसी भी दैविक शक्ति या राजनैतिक सत्ता के आगे अनवनत, मनुष्य की अंतरंग सद्वृत्ति के प्रति आस्थावान, प्रत्येक के स्वाभिमान के प्रति सजग, दृढ़ एवं संगठित अंतःकरण संयुक्त, सक्रिय किन्तु अपीड़क, सत्यनिष्ठ तथा विवके संपन्न होगा।".5

जगदीश गुप्त ने नये मनुष्य का जो स्वरूप प्रस्तुत किया है वह विपरीत स्थितियों में प्रगट नहीं हो सकता। उसे अनुकूल वातावरण न मिले तो वह अमानवीय, क्रूर, स्वार्थी और संकीर्ण हो जाता है। उसके व्यक्तित्व को विकसित होने के लिए जब विस्तार नहीं मिलेगा हर ओर बंधन होंगे, दीवारे होंगी रूढ़ियों की, आडम्बरों की, थोपी हुई मर्यादाएं होंगी तो (रेत बन कर हम सलिल को तनिक गँदला ही करेंगे - अनुपयोगी ही बनायेंगे - अज्ञेय) समग्र रूप से स्थितियाँ त्रासदायक ही होंगी। कहीं आर्थिक वैषम्य के कारण कहीं चिन्तन पारतन्त्र्य के कारण मनुष्य विवके से शून्य, स्वतंत्र संकल्प से रहित, भावावेशों या बाह्य-हिप्नाटिक प्रभावों और ऐंद्रजालिक अन्तर्विरोधों से परिचालित मानव-यंत्र मात्र रह गया है। यदि हम उसकी मानवीयता का पुररूद्धार करके उसे पुनः मूल्यों की खोज और निर्धारण कर अपनी नियति के स्वामी के रूप में प्रतिष्ठित नहीं करते तो हम एक ऐसे अमानुषिक अंधकार

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

के युग में जा गिरेंगे जो मध्ययुग के भयानक से भयानक युगों से ज्यादा त्रासदायक होगा।"6

अंधायुग में नवमानवतावाद

धर्मवीर भारती के इन्हीं विचारों का प्रतिबिम्बन उनकी कालजयी कृति 'अंधायुग' में हुआ है जो नवमानवादी दृष्टिकोण को भी अभिव्यक्त करते हैं।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस नवमानवता में मानव को पाप फल भोगने का परिणाम नहीं बताया है। "अंधायुग में भी सदियों से पाप और पुण्य के प्रतीक बन चुके कौरवों और पाण्डवों को धर्मवीर भारती ने पहली बार पूर्वाग्रह रहित वैज्ञानिक/वस्तुपरक दृष्टि से मनुष्य के रूप में एक ही तराजू पर रखकर तौलने का साहस किया था".7 नवमानवतावादी शोषणरहित समाज की कल्पना करते हैं। शोषण करते हैं राज्य, सता और पूँजी; ऐसे में मानव का सहज विकास नहीं होगा और वह पीड़ित होगा। जनता की पीड़ा उत्पीड़न का कारण राज्य, सत्ता और पूँजी है -

सत्ता होगी उनकी
जिनकी पूँजी होगी
जिनके नकली चेहरे होंगे
केवल उन्हें महत्त्व मिलेगा।
राज शक्तियाँ लोलुप होंगी
जनता उनसे पीड़ित होकर
गहन गुफाओं में छिप-छिपकर दिन काटेगी।.8

राज शक्तियाँ लोलुप होंगी तो वह विवेकहीन भी होंगी, विवेकहीनता अंधापन है। मानव विवेकशील है, परन्तु जब उसके विवेक को कुचला जाता है, बाहर से प्रतिबंध लगाए जाते हैं तब अंधायुग अवतरित होता है, रक्तपात होता है, युद्ध होता है।

यह अजब युद्ध है, नहीं किसी की भी जंग
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है
अंधों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा
दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन।.9

जब मानव स्वार्थी, सत्ता लोलुप और दायित्वहीन हो जाता है तो उचित-अनुचित का विवेक खो देता है परिणाम की चिन्ता किए बगैर आत्मकेन्द्रित और स्वार्थी हो जाता है जो मानवता के लिए, मानवता के समग्र विकास के लिए घातक सिद्ध होता है। धृतराष्ट्र भी पुत्र मोह में अंधे हो गये थे परिणामस्वरूप कुरूक्षेत्र का युद्ध। धृतराष्ट्र को समस्त परिजनों ने राज्य और सत्ता के मोहांध से निकलने की समझाइश दी थी -

भीष्म ने कहा था
गुरू द्रोण ने कहा था
इसी अंतःपुर में
आकर कृष्ण ने कहा था -
"मर्यादा मत तोड़ो
तोड़ी हुई मर्यादा
कुचले हुए अजगर - सी
गुंजलिका में कौरव - वंश को लपेटकर
सूखी लकड़ी - सा तोड़ डालेगी।".10

नवमानवतावादी चिन्तक मानव की स्वतन्त्रता के साथ दायित्व को भी महत्त्व देते हैं। उसके नैतिक दायित्व भी हैं। यदि वह अपने नैतिक दायित्वों का निर्वहन नहीं करेगा तो स्वयं भी टूट जाएगा और समाज का कल्याण तो होगा ही नहीं। अंधायुग में धृतराष्ट्र इसी तरह नैतिक मर्यदाओं से रहित व्यक्ति के रूप में हैं -

मेरा स्नेह, मेरी घृणा, मेरी नीति, मेरा धर्म
बिलकुल मेरा ही वैयक्तिक था।
उसमें नैतिकता का कोई बाह्य मापदण्ड था ही नहीं।.11

ऐसा नहीं है कि मर्यादाएं केवल कौरवों ने ही तोड़ी मर्यादाएं पाण्डवों ने भी तोड़ी। कवि

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नाटककार धर्मवीर भारती ने दोनों को ही दोषी माना। यह वैज्ञानिक वस्तुपरक दृष्टि नवमानवतावादी चिन्तन का ही परिणाम है। यही नहीं उन्होनें तो कृष्ण को भी चुनौती दी है। उनके 'प्रभु' को भी कटघरे में रखा है -

पता नहीं प्रभु है या नहीं
किन्तु उस दिन यह सिद्ध हुआ
जब कोई मनुष्य
अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को,
उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है।
नियति नहीं है पूर्व निर्धारित-
उसको मानव-निर्णय बनाता-मिटाता है।.12

मानव को बाह्य सत्ता, ईश्वर और नियति के हाथों की कठपुतली होता हुआ कोई भी नवमानवतावादी रचनाकार नहीं देख सकता। इसीलिए धर्मवीर भारती एक आदमी को कभी भी इतना ताकतवर, सक्षम होता नहीं देख सकते जिसके तले समस्त मानव जाति बौनी हो जाए - किसी देश की बौद्धिक सक्रियता, जागरूकता और मौलिक चिन्तन शक्ति के लिए इतिहास का इससे दुर्भाग्यपूर्ण क्षण और कोई भी नहीं हो सकता कि देश एक व्यक्ति के समक्ष छोटा या मूल्यहीन साबित किया जाने लगे, समूचे जनमानस की संकल्प शक्ति और जीवन दृष्टि को अक्षम और निःसार बनाने के लिए इससे ज्यादा कारगर और कोई तरीका इतिहास में नहीं रहा है कि एक व्यक्ति की छाया से सारे आकाश को ढँक दिया जाए।".13 इसी कारण गांधारी उन्हें शाप देती है क्योंकि वह उन्हें 'प्रभु' मानती आई परन्तु देखती है कि उन्होंने भी 'प्रभुता का दुरूपयोग' ही किया है। एक ओर प्रभु हैं जो शापग्रस्त हैं -

प्रभु हो
पर मारे जाओगे पशुओं की तरह.14

दूसरी ओर अश्वत्थामा हैं जो प्रतिहिंसा में पशु हो गया है। अर्धसत्य सत्य (नरों वा कुंजरो वा) से छला गया अश्वत्थामा; मानवता का वह विद्रूप चेहरा जो नकारे जाने, उपेक्षित किए जाने, धोखा दिए जाने के परिणामस्वरूप अपनी सारी मानवीय संवेदनाओं को खो चुका है क्योंकि उसे मानवीय गरिमा से पूर्ण सम्मान नहीं मिला। मनोविश्लेषण मानव मन की गुत्थियों को ग्रंथियों को सुलझाता है, खोलता है और उसे गरिमा प्रदान करता है। यही काम किया है धर्मवीर भारती ने नाटक के दूसरे अंक 'पशु का उदय' में। युधिष्ठिर के अर्द्धसत्य से आहत अश्वत्थामा मानव से पशु बन गया -

धर्मराज होकर वे बोले
'नर या कुंजर'
मानव को पशु से
उन्होंने पृथक नहीं किया
उस दिन से मैं हूँ
पशुमात्र, अंध बर्बर पशु.15

इसीलिए अश्वत्थामा के लिए वध नीति रहा बल्कि 'वह है अब मनोग्रंथि का कारण है स्वयं निर्णय न लेना अपने निर्णय दूसरों पर सौंप देना।

मानव ही सर्वोपरि है, छोटे से छोटे मानव भी सार्थक हैं। ईश्वरीय सत्ता के स्थान पर मानव की सार्थकता होगी अश्वत्थामा का यह कथन इसी का परिचायक है -

उसके इस नये अर्थ में
क्या हर छोटे से छोटा व्यक्ति
विकृत, अर्द्धबर्बर, आत्मघाती, अनास्थामय
अपने जीवन की सार्थकता पा जायेगा।.16

कृष्ण की शापत्रस्त हो मृत्यु नये मानव के दायित्वों का बोध है। 'अंधा युग' काव्य-नाटक की अंतिम पंक्तियाँ नव मानव का आरंभ है जो

मानव को संषय हो, दासता से, पराजय से बचाता
है -
पर एक तत्व है, बीज रूप मन में
साहस में, स्वतन्त्रता में, नूतन सर्जन में,
दायित्व मुक्त, मर्यादित, मुक्त आचरण में,
उतना जो अंश हमारे मन का है -
वह अर्द्ध सत्य से, ब्रहमास्त्रों से भय से
मानव-भविष्य को हरदम रहे बचाता
अंधे संशय, दासता, पराजय से।.17

संदर्भ सूची

1.
2. भारतीय सामाजिक चिन्तन, बी.एन. सिंह, पृ. 273 ।
3. निराला काव्य में मानवीय चेतना, डॉ.रमेश दत्त मिश्रा, पृ. 47 ।
4. इ.प्र. ग्रंथावली - 10 - पृ. 79-80 ।
5. इ.प्र. ग्रंथावली - 10 - पृ. 79-80 ।
6. शम्बूक, जगदीश गुप्त, भूमिका से।
7. पश्यन्ती, धर्मवीर भारती, पृ.-106 ।
8. आधुनिक भारतीय नाट्य - विमर्श, जयदेव तनेजा, पृ. 27 ।
9. अंधायुग, धर्मवीर भारती, पृ.-02 ।
10. अंधायुग, धर्मवीर भारती, पृ.-03 ।
11. अंधायुग, धर्मवीर भारती, पृ.-08 ।
12. अंधायुग, धर्मवीर भारती, पृ.-16 ।
13. पश्यन्ती, धर्मवीर भारती, पृ. 100 ।
14. अंधायुग, धर्मवीर भारती, पृ.
15. अंधायुग, धर्मवीर भारती, पृ.-25
16. अंधायुग, धर्मवीर भारती, पृ.-106
17. अंधायुग, धर्मवीर भारती, पृ.-108